

द्रव्यसंग्रह का प्राचीन पद्यानुवाद

-प्रो. वीरसागर जैन

आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्ती की अनुपम कृति 'द्रव्यसंग्रह' के आज तो अनेक हिन्दी-पद्यानुवाद हो चुके हैं, किन्तु हममें से अधिकांश लोग यह नहीं जानते हैं कि इसका एक प्राचीन हिन्दी-पद्यानुवाद भी मिलता है, जिसे आज से लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष पूर्व विक्रम संवत् 1731 में भैया भगवतीदासजी ने किया था। मेरी दृष्टि में यह द्रव्यसंग्रह का प्रथम पद्यानुवाद है। तथा इसे पढ़कर मुझे ऐसा भी लगता है कि भैया भगवतीदासजी अपने समय में 'द्रव्यसंग्रह' को पढ़ाने में विशेष कुशल माने जाते होंगे और उन्होंने इस पद्यानुवाद से बहुत लोगों को द्रव्यसंग्रह का स्वाध्याय कराया होगा, 'द्रव्यसंग्रह' के प्रचार-प्रसार में उनका बड़ा भारी योगदान रहा होगा। यही कारण है कि मैं आज आपको इस पद्यानुवाद का संक्षेप में कुछ परिचय देना चाहता हूँ, ताकि आपको भी इस पद्यानुवाद को और उसके माध्यम से द्रव्यसंग्रह को पढ़ने की प्रेरणा मिले। द्रव्यसंग्रह एक बहुत ही आधारभूत और प्रयोजनभूत ग्रन्थ है।

भैया भगवतीदासजी का यह हिन्दी-पद्यानुवाद वर्तमान में उनके संकलन 'ब्रह्म-विलास' में उपलब्ध है, जो हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय मुम्बई से वीर-निर्वाण संवत् 2430 में प्रकाशित हुआ है, किन्तु अब यह बहुत पुराना हो गया है, पुरानी पद्धति से भी छपा है, अतः इसे पुनः आधुनिक रूप में प्रकाशित किया जाना चाहिए और यदि हो सके तो उसके साथ उसका हिन्दी-अर्थ भी लिख देना चाहिए, ताकि सर्व साधारण को इसका लाभ मिल सके। भैया भगवतीदासजी ने भी यह पद्यानुवाद सर्व साधारण के लाभ हेतु ही किया था, जैसा कि इसकी अन्तिम प्रशस्ति से ज्ञात होता है-

“गाथा मूल नेमिचंद्र करी | महा अर्थ निधि पूरण भरी ॥
बहु श्रुत धारी जे गुणवंत | ते सब अर्थ लखहिं विरतंत ॥
हमसे मूरख समझें नाहिं | गाथा पढ़े न अर्थ लाखाहिं ॥
काहू अर्थ लखे बुधि ऐन | वांचत उपज्यो अति चित चैन ॥
जो यह ग्रन्थ कवित में होय | तो जग माहिं पढ़े सब कोय |
इह विधि ग्रन्थ रच्यो सुविकास | मानसिंह व भगोतीदास ॥”

यहाँ 'मानसिंह व भगोतीदास' -इस वाक्य से यह भी ध्वनित होता है कि भैया भगवतीदासजी ने यह पद्यानुवाद अपने मित्र मानसिंह की सहायता से किया होगा।

पद्यानुवाद के अन्त भैया भगवतीदासजी ने द्रव्यसंग्रह की महिमा का वर्णन करते हुए अपनी लघुता का भी वर्णन किया है। यथा-

“ नेमचंद्र मुनिनाथ ने, इह विधि रचना कीन |
गाथा थोरी अर्थ बहु, निपट सुगम कर दीन ॥1 ॥”

X X

“द्रव्यसंग्रह गुण उदधि सम, किह विधि लहिए पार ।
यथा शक्ति कछु बरनिये, निज मति के अनुसार ॥ 3 ॥”

तथा अन्त में पुनः एक बार अपने पद्यानुवाद का रचना-काल बताते हुए भी उन्होंने द्रव्यसंग्रह को प्रणाम किया है । यथा-

“संवत् सत्रह सै इकतीस, माघ सुदी दशमी शुभ दीस ।
मंगल करण परम सुख धाम, द्रव्यसंग्रह प्रति करहु प्रनाम ॥ 7 ॥”

अर्थात् यह पद्यानुवाद माघ शुक्ल दशमी विक्रम संवत् 1731 की शुभ तिथि में पूर्ण हुआ, जो अत्यन्त मंगलकारी और परमसुख का भण्डार है, मैं इस द्रव्यसंग्रह को प्रणाम करता हूँ ।

तथा प्रशस्ति में ही इस द्रव्यसंग्रह के स्वाध्याय का उत्तम फल भी निरूपित किया है, जो परम आध्यात्मिक होने से हृदयस्पर्शी है । यथा-

“ज्ञानवंत गुण लहै, गहै आतम रस अमृत ।
परसंगत सब त्याग, शांत रस वरे सु निज कृत ।
वेदे निज-पर-भेद, खेद सब तजे कर्म तन ।
छेदे भवथिति वास, दास सब करहि अरिनगन ।
इह विधि अनेक गुन प्रकट करि, लहै सु शिवपुर पलक में ।
चिद्विलास जयवंत लखि, लेहु भविक निज झलक में ॥ 2 ॥”

भैया भगवतीदासजी के इस पद्यानुवाद में हर गाथा का पद्यानुवाद प्रायः कवित्त छंद में किया गया है, परन्तु कहीं-कहीं दोहा, चौपाई, छप्पय, दुर्मिल आदि अन्य छन्दों का भी प्रयोग हुआ है । पूरा ही पद्यानुवाद तत्कालीन साहित्यिक भाषा ब्रज भाषा में हुआ है, तथापि अत्यन्त सरल-सुबोध है और मूल गाथाओं के बहुत अधिक निकट है । उदाहरणार्थ एक गाथा और उसका पद्यानुवाद द्रष्टव्य है-

णिक्कम्मा अट्टगुणा किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा ।
लोग्गगठिदा णिच्चा उप्पादवयेहिं संजुत्ता ॥ 14 ॥

(हिन्दी-पद्यानुवाद)

अष्टकर्महीन अष्टगुणजुत चरम सु देह तातें कछु ऊनो सुख कौ निवास है ।
लोक कौ जु अग्र तहाँ स्थित है अनंत सिद्ध, उत्पाद व्यय संयुक्त सदा जाकौ वास है ॥
अनन्त काल पर्यन्त थिति है अडोल जाकी लोकालोक प्रतिभासी ज्ञान को प्रकाश है ।
निश्चय सुख राज करै बहुरि न जन्म धरै ऐसो सिद्ध राशनि कौ आतम विलास है ॥

कहने की आवश्यकता नहीं है कि बहुत ही सरस और मुलानुगामी पद्यानुवाद है। निश्चय ही उस जमाने में बहुत लोग इसे सहजता से कंठस्थ करके तत्त्वज्ञान का अभ्यास करते होंगे। शिक्षा के उस अन्धकार काल में इस पद्यानुवाद ने सर्वत्र तत्त्वज्ञान का अमृतोपम प्रकाश फैलाया होगा।

इस प्रकार भैया भगवतीदासजी का यह हिन्दी-पद्यानुवाद अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। किसी विद्वान् को इसका समीक्षात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत करना चाहिए, ताकि इसका महत्त्व भलीभांति प्रकाशित हो सके। तथा इससे हम सबको द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ के स्वाध्याय की गहरी प्रेरणा लेनी चाहिए। द्रव्यसंग्रह तत्त्वज्ञान के लिए बड़ा ही अनुपम ग्रन्थ है। यह बड़ा ही संतुलित और सारग्राही है, सम्पूर्ण जिनागम के मूलभूत विषय इस छोटे से ग्रन्थ में समाहित कर दिए हैं। यह आज के वैज्ञानिक युग के भी बहुत अनुकूल है, इसकी सारी बातें आज विज्ञान भी सिद्ध कर रहा है, अतः इसके माध्यम से आबालगोपाल सभी को सुगमतापूर्वक जैन तत्त्वज्ञान कराया जा सकता है। इस ग्रन्थ पर आज बहुत अधिक बल देने की आवश्यकता है। इसकी अनेक व्याख्याएँ, प्रेजेंटेशन आदि भी आधुनिक ढंग से बनाने चाहिए और उनका संसार की सभी भाषाओं में अनुवाद भी होना चाहिए। जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण में द्रव्यसंग्रह की महती भूमिका रही है, आज भी है और आगे भी रहेगी।